महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के पंचम् दीक्षान्त समारोह पर उद्बोधन

स्थान:- चित्रकूट,दिनांक:-15 मार्च समय:-11 बजे

महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के पंचम दीक्षान्त समारोह के अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय की स्थापना प्रख्यात समाजसेवी नानाजी देशमुख द्वारा सन् 1991 में चित्रकूट में की गई। यह भारत का पहला ग्रामीण विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य ग्रामीण भारत को शिक्षा,शोध एवं प्रसार कार्यों से प्रगति और विकास की ओर अग्रसर करना है। विश्वविद्यालय के लिए यह आत्मिक गौरव की अनुभूति का विषय है कि विश्वविद्यालय ने अपने कार्यक्रमों एवं उपलब्धियों से विगत दो दशक में महत्वपूर्ण स्थान अर्जित किया है। चित्रकूट के सुरम्य वातावरण और विश्वविद्यालय के सृजनात्मक परिसर में छात्रों ने निष्ठापूर्वक अध्ययन कर देश-विदेश में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ अर्जित की हैं।

महात्मा गांधी के ग्राम विकास का दर्शन ग्रामोदय विश्वविद्यालय का शाश्वत प्रेरणा स्त्रोत है। विश्वविद्यालय के कार्यों में ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए शिक्षा एवं तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ समस्त आयामों पर उच्च शिक्षा,शोध,प्रशिक्षण एवं प्रसार द्वारा संस्कार-युक्त शक्ति तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है।

उच्च शिक्षा से युवा पीढ़ी में ग्राम जीवन की समझ और समस्याओं को हल करने की संवेदनशीलता विकसित करने हेतु विश्वविद्यालय सतत् प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय का लक्ष्य ग्रामीण विकास के लिए आवश्यक प्रविधियों को विकसित करना एवं सम्पूर्ण व्यापीकरण से ग्रामीण भारत के सशक्तीकरण में योगदान करना है। इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विश्वविद्यालय परिवार सतत् प्रयत्नशील है।

प्रसन्नता का विषय है कि विश्वविद्यालय ने अपनी दैनन्दिन गतिविधियों में अनेक नवाचारों को प्रभावी ढंग से कार्यरूप में परिणित किया है,जिनमें छात्रों के लिए पढ़ो और कमाओ योजना को मूर्त रूप देना प्रमुख है। ग्रामोदय के छात्र विश्वविद्यालय के अभिलेखों के निर्माण एवं कम्प्यूटर में डेटा एन्ट्री,पुस्तकों के रखरखाव,बैंक रिकाँसिलेशन में योगदान एवं आई.टी.सेवायें देकर न केवल विश्वविद्यालय की प्रगति एवं विकास के सहभागी बन रहे हैं वरन् अपने परिश्रम एवं लगन से ज्ञानार्जन के साथ धनार्जन भी कर रहे हैं।

मुझे खुशी है कि विश्वविद्यालय थिन्क ग्लोबली,एक्ट लोकली के सिद्धान्त पर चित्रकूट के आसपास की सांस्कृतिक,प्राकृतिक धरोहर के संरक्षण ,संपोषण एवं संवर्धन के लिए अनेक कार्य कर रहा है। इस क्रम में इस क्षेत्र में उपलब्ध अतिदुर्लभ औषिधीय पौधे के संरक्षण और संपोषण का महत्वपूर्ण कार्य विश्वविद्यालय ने अपने हाथ में लिया है। अपनी आकांक्षाओं को एक कार्य योजना में ढालकर विश्वविद्यालय अतिशीघ्र विद्यार्थियों एवं विशेषज्ञों की सहभागिता से इस दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने हेतु तैयार है। मदांकिनी नदी के जल की गुणवत्ता मापन,स्वच्छता और प्रदूषण रहित बनायें रखनें की दिशा में अनेक संस्थाओं के साथ संलग्न हैं।

उच्च शिक्षा में नवाचारों की श्रृंखला में विश्वविद्यालय ने सत्रारम्भ के अवसर पर पन्द्रह दिवसीय ग्रामोदय छात्र उन्मुखीकरण समारोह के आयोजन से छात्रों में शारीरिक,मानसिक एवं मूल्य अनुप्राणित गतिविधियों के जरिये व्यक्तित्व निर्माण का महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ किया है।

अकादमिक गतिविधियों को निर्धारित समय सीमा में पूर्ण करने में ग्रामोदय विश्वविद्यालय ने जो स्थान पूरे प्रदेश में अर्जित किया है वह सहज गौरवान्वित करता है। बिना विलम्ब किये परीक्षा परिणाम घोषित करने के लिये विश्वविद्यालय को राज्य शासन के उच्च शिक्षा विभाग से तथा राजभवन से प्रशंसा मिली है।

विश्वविद्यालय के शोध पाठ्¬क्रम संचालन व्यवस्था को पूरे देश में सराहना मिली है। यू.जी.सी के शोध विनिमय 2009 के आधार पर पी-एच.डी उपाधि के लिये प्रवेश परीक्षा एवं अनिवार्य पाठ¬क्रम सफलतापूर्वक लागू करने वाला यह प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय भी है।शिक्षा के आलोक को गाँव-गाँव तक पहुँचाने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय 116 दूरवर्ती अध्ययन केंन्द्रों और स्वाध्यायी परीक्षा प्रणाली के माध्यम से वांछित मानव संसाधन तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। विश्वविद्यालय ने कौशल विकास एवं कौशल प्रमाणीकरण के लिये सामुदायिक महाविद्यालय योजना को अंगीकृत किया है जिसके अन्र्तगत वर्तमान में चार महाविद्यालय संचालित हो रहे हैं।

इस प्रकार विश्वविद्यालय अपने सीमित संसाधनों से शिक्षा,शोध और प्रसार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

इस अवसर पर मैं एक बार पुन: आप सभी को अपनी शुभकामनायें देता हूँ।

जय हिन्द।महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के पंचम् दीक्षान्त समारोह पर उद्बोधन

स्थान:- चित्रकूट,दिनांक:-15 मार्च समय:-11 बजे

महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के पंचम दीक्षान्त समारोह के अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय की स्थापना प्रख्यात समाजसेवी नानाजी देशमुख द्वारा सन् 1991 में चित्रकूट में की गई। यह भारत का पहला ग्रामीण विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य ग्रामीण भारत को शिक्षा,शोध एवं प्रसार कार्यों से प्रगति और विकास की ओर अग्रसर करना है। विश्वविद्यालय के लिए यह आत्मिक गौरव की अनुभूति का विषय है कि विश्वविद्यालय ने अपने कार्यक्रमों एवं उपलब्धियों से विगत दो दशक में महत्वपूर्ण स्थान अर्जित किया है। चित्रकूट के सुरम्य वातावरण और विश्वविद्यालय के सृजनात्मक परिसर में छात्रों ने निष्ठापूर्वक अध्ययन कर देश-विदेश में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ अर्जित की हैं।

महात्मा गांधी के ग्राम विकास का दर्शन ग्रामोदय विश्वविद्यालय का शाश्वत प्रेरणा स्त्रोत है। विश्वविद्यालय के कार्यों में ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए शिक्षा एवं तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ समस्त आयामों पर उच्च शिक्षा,शोध,प्रशिक्षण एवं प्रसार द्वारा संस्कार-युक्त शक्ति तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है।

उच्च शिक्षा से युवा पीढ़ी में ग्राम जीवन की समझ और समस्याओं को हल करने की संवेदनशीलता विकसित करने हेतु विश्वविद्यालय सतत् प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय का लक्ष्य ग्रामीण विकास के लिए आवश्यक प्रविधियों को विकसित करना एवं सम्पूर्ण व्यापीकरण से ग्रामीण भारत के सशक्तीकरण में योगदान करना है। इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विश्वविद्यालय परिवार सतत् प्रयत्नशील है।

प्रसन्नता का विषय है कि विश्वविद्यालय ने अपनी दैनन्दिन गतिविधियों में अनेक नवाचारों को प्रभावी ढंग से कार्यरूप में परिणित किया है,जिनमें छात्रों के लिए पढ़ो और कमाओ योजना को मूर्त रूप देना प्रमुख है। ग्रामोदय के छात्र विश्वविद्यालय के अभिलेखों के निर्माण एवं कम्प्यूटर में डेटा एन्ट्री,पुस्तकों के रखरखाव,बैंक रिकाँसिलेशन में योगदान एवं आई.टी.सेवायें देकर न केवल विश्वविद्यालय की प्रगति एवं विकास के सहभागी बन रहे हैं वरन् अपने परिश्रम एवं लगन से ज्ञानार्जन के साथ धनार्जन भी कर रहे हैं।

मुझे खुशी है कि विश्वविद्यालय थिन्क ग्लोबली,एक्ट लोकली के सिद्धान्त पर चित्रकूट के आसपास की सांस्कृतिक, प्राकृतिक धरोहर के संरक्षण, संपोषण एवं संवर्धन के लिए अनेक कार्य कर रहा है। इस क्रम में इस क्षेत्र में उपलब्ध अतिदुर्लभ औषिधीय पौधे के संरक्षण और संपोषण का महत्वपूर्ण कार्य विश्वविद्यालय ने अपने हाथ में लिया है। अपनी आकांक्षाओं को एक कार्य योजना में ढालकर विश्वविद्यालय अतिशीघ्र विद्यार्थियों एवं विशेषज्ञों की सहभागिता से इस दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने हेतु तैयार है। मदांकिनी नदी के जल की गुणवत्ता मापन,स्वच्छता और प्रदूषण रहित बनायें रखनें की दिशा में अनेक संस्थाओं के साथ संलग्न हैं।

उच्च शिक्षा में नवाचारों की श्रृंखला में विश्वविद्यालय ने सत्रारम्भ के अवसर पर पन्द्रह दिवसीय ग्रामोदय छात्र उन्मुखीकरण समारोह के आयोजन से छात्रों में शारीरिक, मानसिक एवं मूल्य अनुप्राणित गतिविधियों के जरिये व्यक्तित्व निर्माण का महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ किया है।

अकादमिक गतिविधियों को निर्धारित समय सीमा में पूर्ण करने में ग्रामोदय विश्वविद्यालय ने जो स्थान पूरे प्रदेश में अर्जित किया है वह सहज गौरवान्वित करता है। बिना विलम्ब किये परीक्षा परिणाम घोषित करने के लिये विश्वविद्यालय को राज्य शासन के उच्च शिक्षा विभाग से तथा राजभवन से प्रशंसा मिली है।

विश्वविद्यालय के शोध पाठ्यक्रम संचालन व्यवस्था को पूरे देश में सराहना मिली है। यू.जी.सी के शोध विनिमय 2009 के आधार पर पी-एच.डी उपाधि के लिये प्रवेश परीक्षा एवं अनिवार्य पाठ¬क्रम सफलतापूर्वक लागू करने वाला यह प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय भी है।शिक्षा के आलोक को गाँव-गाँव तक पहुँचाने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय 116 दूरवर्ती अध्ययन केंन्द्रों और स्वाध्यायी परीक्षा प्रणाली के माध्यम से वांछित मानव संसाधन तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। विश्वविद्यालय ने कौशल विकास एवं कौशल प्रमाणीकरण के लिये सामुदायिक महाविद्यालय योजना को अंगीकृत किया है जिसके अंतर्गत वर्तमान में चार महाविद्यालय संचालित हो रहे हैं।

इस प्रकार विश्वविद्यालय अपने सीमित संसाधनों से शिक्षा, शोध और प्रसार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

इस अवसर पर मैं एक बार पुन: आप सभी को अपनी शुभकामनायें देता हूँ।

जय हिन्द।